सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - पुष्टिमार्ग

Vibrant Pushti

" जय श्री कृष्ण "

कितनी बार नाथद्वारा पहुँची?

कितनी बार गिरिराजजी पहुँची?

एक व्यक्ति ने प्रश्न पूछा

मुझे हवेली अर्थात मंदिर जाने की आज्ञा है?

मुझे दर्शन करने की आज्ञा है?

मुझे दंडवत करने की आज्ञा है?

मुझे भेंट करने की आज्ञा है?

मुझे मनोरथ करने की आज्ञा है?

मुझे प्रसाद लेने की आज्ञा है?

मुझे कीर्तन करने की आज्ञा है?

मुझे हवेली सेवा करने की आज्ञा है?

मुझे हवेली अर्थात मंदिर में आते व्यक्ति के साथ बात करने या कुछ पूछने की आज्ञा है?

मुझे हवेली अर्थात मंदिर के संस्थापक को पूछने की आज्ञा है?

मुझे हररोज हवेली अर्थात मंदिर आने की आज्ञा है?

मुझे कोई भी शमा या हर शमा के दर्शन की आज्ञा है?

मुझे हवेली अर्थात मंदिर के परिक्रमा की आज्ञा है?

मुझे पैसा भेंट करने की आज्ञा है?

मुझे कोई भी वस्तु भेंट करने की आज्ञा है?

मुझे जो भी आचार्य बिराजते है उन्हें मिलने की आज्ञा है?

मुझे किस किस से मिलना और किस किस से नही मिलने की आज्ञा है?

मुझे यात्रा करने की आज्ञा है?

आदि इतने प्रश्न जो प्रश्न ने पुष्टिमार्ग को नष्ट कर दिया है - हर बात पर आज्ञा

हर रीत की आज्ञा

क्या यह ही पुष्टिमार्ग सिद्धांत है?

क्या यह ही पुष्टिमार्ग सहिंता है?

क्या यह ही पुष्टिमार्ग शुद्धता है?

क्या यह ही पुष्टिमार्ग जीवन है?

क्या यही रीत से ही पुष्टि सेवक हो सकते है?

"Vibrant Pushti"

अकेली मत जइयो गोवर्धन के तलेटी

ओ ओ

तु यमुना की मौज में पुष्टि की धारा

हो रहेगा मिलन हे हमारा तुम्हारा

अगर तु है सेवा तो सेवक मैं हूँ

तेरे ब्रह्मसंबंध का आत्मा मैं हूँ

चलेगी अकेली न तुमसे जीवन नैया

मिलेगी न मंझिल तुम्हें बिन कनैया

पुकारलो जी संवारलो जी

पकडलो जी संभालों जी पुष्टि मार्ग का सहारा

हो रहेगा मिलन,

हे हमारा तुम्हारा हो सकेगा मिलन

"Vibrant Pushti":

कैसे ले सकता हूँ कुछ किसीका

मेरा अंग है

है मेरी हर इन्द्रियाँ

मेरा मन है

है मेरी हर सच्चाई

मेरा धन है

है मेरा हर पुरुषार्थाई

मेरा विश्वास है

है मेरी हर इमानाई

मेरा धर्म है

है मेरी हर साक्षाराई

किसका ले कर क्या हो सकता है मेरा

जो सूत सूत कर जो ऋण ऋण कर भरपाई

जन्म जन्म जीवन जीवन कब तक करे भुगताई

सोच से ले लू

सामर्थ्य से ले लू

मन से ले लू

तन से ले लू

लूट से ले लू

घुमाके ले लू

बल से ले लू

कल से ले लू

चोरी से ले लू

छल से ले लू

कपट से ले लू

झपट से ले लू

कैसे भी लिया मैं हो गया अदा कार

जन्म जन्म में जीवन जीवन से

मैं हो गया कोई कोई का करज दार

फसता चला मैं डूबता गया मैं

रुँधता भरा अँधता अपनाता संसार

कौन कैसे निकाले कैसे संभाले

हर घड़ी से मैं घट घट भरता मायाजाल

"श्री कृष्ण शरणं ममः" केवल एक द्वार

जो आंतर मन तन धन जगाये संस्कार

जो घट घट मिटाये हर ऋण स्वीकार

मनुष्य योनि मनुष्य ज्ञानी मनुष्य शक्ति मनुष्य भक्ति

यही ही है सृष्टि संचार यही ही है प्रकृति पुकार

यही ही है सत साक्षात्कार यही ही है आनंदाकार

"Vibrant Pushti"

जो पंथ निहारे पुष्टि का

व्रज रज छुये

श्रीयमुना स्पर्शे

गिरिराजजी पाये

हमसा एक सेवक ......

"Vibrant Pushti"

" जय श्री वल्लभ "

श्री सुबोधिनीजी

"निवृत्त तर्षा रुप गीयमानाभ्दवौ षधाच्छ्रोत्रमनो भिरामात्।

क उत्तमश्लोकगुणानुवादात् पुमान् विरज्येत विना पशुघ्नात् ।।

श्रीवल्लभ! कितना अलौकिक और सर्वोत्तम हमें शिखा रहे है।

श्री प्रभु स्मरण - श्री प्रभु धून - श्री प्रभु नाम सकीर्तन - श्री प्रभु भजन - श्री प्रभु गुणगान - श्री प्रभु भक्ति गान - श्री प्रभु भक्ति कथन - श्री प्रभु भक्ति कहन - श्री प्रभु भक्ति श्रवण - श्री प्रभु स्मरण ऊवाच - श्री प्रभु भक्ति स्वरर - श्री प्रभु भक्ति सृजन

कोई सामान्यता नही है, यह कोई ऐसी कृति और गति नही है जो ऐसे ही उत्स हो जाए, उदभव हो जाए, प्रकट हो जाए, जागृत हो जाए, उजागर हो जाये, उठ जाए।

हमारा कोई न कोई

जन्मों जन्म का

अंशी अंश का

संयोजित संयोग का

स्पर्श स्पर्श का

ऋणात्मक बंधन का

संबंध ब्रह्मसंबंध का

एकात्मता हो, तो ही हम यह संस्करण पाते है, नही तो

न स्मरण है न ध्यान है

केवल मोह, लोभ, काम में खो जाते है, भूल जाते है, नष्ट हो जाते है।

"Vibrant Pushti"

ओ श्रीनाथजी

तेरा द्वार है नाथद्वारा

तेरा बसना है बरसाना

तेरा नाचना है नंदगाँव

तेरा लीला वृंद है वृंदावना

तेरा गौचारण है गोवर्धना

खुद को संभालना अब ऐसी रीत से

क्यूँकी

मेरा नैन है अब तेरा द्वार - नाथद्वार

मेरा तन है अब तेरा बसना - बरसाना

मेरा मन है अब तेरा नाचना - नंदगाँव

मेरी इन्द्रियाँ है अब तेरा वृंद - वृंदावन

मेरी क्रिया है अब गौचारण - गोवर्धन

तुझे ठहरना मेरे द्वार

तुझे बसना मेरे स्वार

तुझे नाचना मेरे घर

तुझे लूटाना मेरे प्यार

तुझे करना मेरे गौचार

क्यूँकी

तुने जन्म दिया जगत द्वार

तुने मनुष्य तन रचाया सृष्टि अपार

तुने नाँच नचाने जगाया संसार

तुने प्रीत लुटाने प्रकटाया प्यार

तुने पुरुषार्थ करने किया धर्म संस्कार

यही नैन है तेरे

यही मन है तेरे

यही तन है तेरे

यही धन है तेरे

यही जीवन है तेरे

यही स्मरण है तेरे

यही प्रियतम है तेरे

न तु कहीं जा सकता है हमसे

न तु कुछ कर सकता है बिना हमसे

तु ही हम है

हम ही तु है।

"Vibrant Pushti"

मैं पढ़ रहा था मेरे जीवन की किताब

हर पन्ने पर "जय श्री कृष्ण" लिखा था

हर पन्ने पर "श्री कृष्ण शरणं ममः" लिखा था

मैं सहसा गया

कौन लिख रहा था हर पन्ने पर ऐसा

संवरता संवरता पहचान लिया

लिख रही थी मेरी माता "जय श्री कृष्ण"

लिख रहे थे मेरे पिता "श्री कृष्ण शरणं ममः"

माता सुबह मंगल मुहर्त में करती थी पार्थना

पिता शाम की संध्या वंदना में करते थे साधना

यही ही है जीवन पुरुषार्थ जो जन्म करे कृतार्थ

निस्वार्थ से जीना, विश्वास से जीना

संस्कृति संस्कार पल पल संवरना

हर एक के भीतर हरि निहालु

हर मन के भीतर आनंद उजालु

"जय श्री कृष्ण" पल पल निभाऊं

"श्री कृष्ण शरणं ममः" सदा ध्याउँ

न रहे दोष न रहे विटाम्बना

हर पल मधुर रहे मेरे अंगना

"Vibrant Pushti"

क्या है यह उत्सव जन्माष्टमी

जो निर्धन धन धन लूटाये

घर घर दीपक प्रकटाये

घर घर नंदगाँव रचाये

खुद को समझे बाबा नंद यशोदा

अपने को माने गोप गोपिका

ऐसे सजाये गृह वाटिका

जैसे कान्हा खुद जन्म धराये

श्रृंगार पहने रास खेले

खेले लीला श्री कृष्ण कन्हाई का

ऐसे रोम रोम में बसे गोविंदा

बसाये कृष्ण संस्कृति जीवन में

गृह गृह लाला गृह गृह गोपाला

बंसी बजाके नांचे धर्म वैष्णवता

गोकुल गोवर्धन नंदगाँव बरसाना

यमुना वृंदावन वृजधाम मथुरा

ऐसो है मोरो घर में नंदमहोत्सव

जो जन जन गाये

"नंद घेर आनंद भयो जय कनैया लाल की

हाथी घोड़ा पालकी जय हो नंद लाल की"

आजे श्री कृष्ण पधार्या मारे आँगनिया रे

उर मां उमंग थाय

हैया ना दीठनार हमारे संग संग जिये रे जगाये प्रीत अपरंपार

शु हरि गुण गाय आ पापी तन जीवलडो रे

खुद आनंद लूटावा आय

आओ छे चितचोर प्यारो साँवरियो मारो

जो जन्म जन्म सोहाय

"Vibrant Pushti"

गिरिराजजी का स्मरण हो

यमुनाजी का दर्शन हो

अष्टसखा का कीर्तन हो

वल्लभ का पुष्टि चिंतन हो

श्रीनाथजी का ब्रह्मसंबंध हो

"Vibrant Pushti"

"नंद घेर आनंद भयो
जय कनैया लाल की
हाथी घोड़ा पालकी
जय हो नंद लाल की"

क्या कह रहा है यह धून?
"नंद घेर आनंद भयो"

नही सुख भयो नही वैभव भयो

भयो आनंद भयो आंतर नाद

कैसे थे नंद गाँव के वासी

जो कर दिया सारे ब्रहांड को व्रज वासी

एक एक गोपि एक एक गोप

हर एक के तन मन धन में व्याप

अखिल ब्रह्मांड के परंब्रह्म पधारे थानके नन्हा बाल गोपाल

मेरे जीवन में आनंद भरने

मेरे जीवन में प्रीतरस भरने

यमुना जगायी गोवर्धन जगाया

जीवन खेलने अष्टसखा जगाया

साँस साँस राधा प्रकटायी

स्वर स्वर वल्लभ प्रकटाये

ऐसो है मेरो श्री नाथ

ऐसो है मेरो प्रियतम

जो पल पल मेरे साथ जिये

जो क्षण क्षण मेरो हाथ पकड़े

पुकारता था

घड़ी दो घड़ी पहले

सोचता था

कुछ स्पर्श पाऊँ

संकेत पाया तुमने

जैसे मेरी पुष्टि सुनी

" Vibrant Pushti "

"गूँजा मधुरा"

कैसी गूँज लगाई श्री वल्लभ ने

जो गूँज श्री श्रीनाथजी को जगाई

दौड़ के आये श्री यमुना के द्वारे

पुष्टि सृष्टि की सिद्धांत रचाई

ऐसी गूँज जो मुझमें जागे

ऐसी गूँज मेरे आत्म तट श्रीयमुनाजी जगाये

ऐसी गूँज मेरे मन द्वार श्री वल्लभ जगाये

ऐसी गूँज मेरे तन रोम श्री गोवर्धन जगाये

ऐसी गूँज मेरे धन रंग श्री अष्टसखा जगाये

ऐसी गूँज मेरे जीवन साँस श्री षोडसग्रंथ जगाये

तो मेरे रंग तरंग में पुष्टि

तो मेरे अंग संग में पुष्टि

तो मेरे सृजन दर्शन में पुष्टि

तो मेरे अर्चन पूजन में पुष्टि

तो मेरे कर्म धर्म में पुष्टि

"Vibrant Pushti"

इतना थका हूँ

पर

हर बार श्री वल्लभ और श्री श्रीनाथजी आत्म में आ बसते है और कहते है

तुम ऐसे थक जाते हो तो हमारा क्या हाल होता होगा!

" Vibrant Pushti "
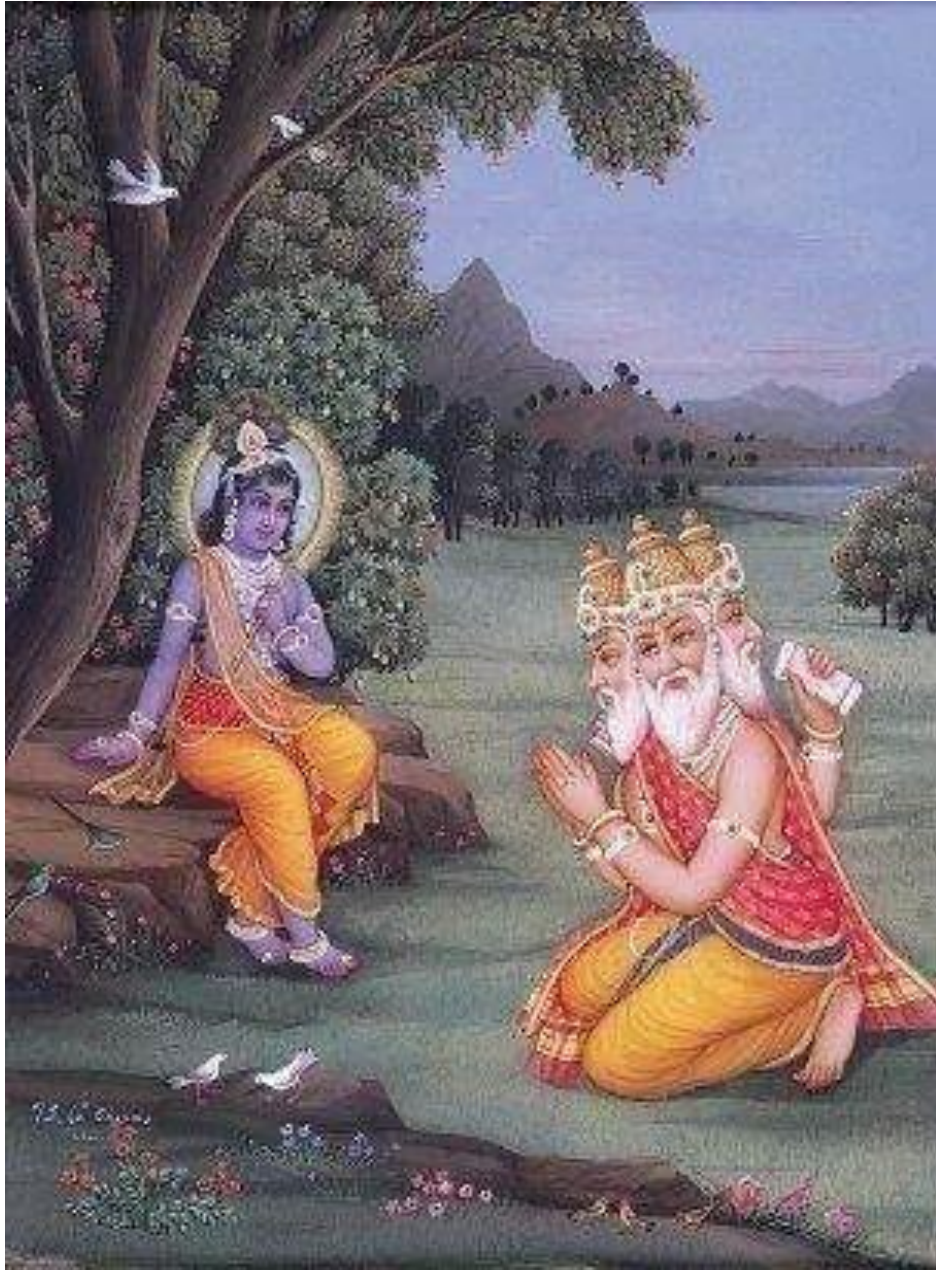
"गूँजा मधुरा माला मधुरा

यमुना मधुरा वीचिर्मधुरा"

गूँजा

गूँज से गूँजा हुआ।

हर एक वैष्णव की गूँज

हर एक गोपि की गूँज

हर एक गोप की गूँज

हर एक आचार्य की गूँज

हर एक पुष्टि तत्व की गूँज

हर एक सृष्टि की गूँज

हर एक प्रकृति की गूँज

हर एक ब्रह्म की गूँज

जो गूँज से गूँजा अधिक द्रढ हुई है

कैसी गूँज थी वैष्णव की

कैसी गूँज थी गोपि की

कैसी गूँज थी गोप की

कैसी गूँज थी आचार्य की

कैसी गूँज थी पुष्टि तत्व की

कैसी गूँज थी सृष्टि की

कैसी गूँज थी प्रकृति की

कैसी गूँज थी ब्रह्म की

गूँज सदा आंतर ध्वनि है

गूँज सदा आंतर नाद है

गूँज सदा आंतर सूर है

गूँज सदा आंतर पुकार है

गूँज सदा आंतर आहवान है

यहाँ श्री वल्लभाचार्यजी ने जो गूँज लिख कर

यहाँ श्री वल्लभाचार्यजी ने जो गूँज कही

यहाँ श्री वल्लभाचार्यजी ने जो गूँज गाई

यहाँ श्री वल्लभाचार्यजी ने जो गूँज अनुभई

ओहह श्री वल्लभ!

आपश्री हमें क्या स्पर्श कराके क्या क्या परिवर्तन कराते हो?

"Vibrant Pushti"

श्री श्रीनाथजी के नयन अर्ध खुले और दृष्टि नही समांतर - नही उपर पर नीचे की तरफ है।

क्यूँ?

अर्ध खुले नयन अर्ध बंध नयन

अर्ध कहे नयन अर्ध सुने नयन

अर्ध मिले नयन अर्ध जागे नयन

अर्ध हँसे नयन अर्ध मूंदे नयन

अर्ध लूटे नयन अर्ध लूटाये नयन

अर्ध विरहे नयन अर्ध बसाये नयन

अर्ध संकेताये नयन अर्ध परिक्षारथे नयन

अर्ध अपनाये नयन अर्ध निरिक्षणाये नयन

अर्ध अपूर्णाये नयन अर्ध पुष्टाये नयन

अर्ध विचलित नयन अर्ध अविचलित नयन

अर्ध स्वीकार्य नयन अर्ध परिकार्य नयन

अर्ध प्रीताये नयन अर्ध माधुर्याये नयन

अर्ध कृपाये नयन अर्ध कृतार्थाये नयन

सच! कैसे है श्री श्रीनाथजी के नयन?

कौन क्या भाव और ज्ञान अनुभवते नयन?

कौनसा शरण और अर्पण करते है नयन?

हे श्री वल्लभ!

"Vibrant Pushti"

"नंद घर आनंद भयो"

ओहह!

"नंद घर सुख भयो" क्यूँ ऐसा न कहा?

मनुष्य को यह तफावत समझना है।

हम जगत वासी और हमारी भूमि पर श्रीकृष्ण ने अवतार धरा, अर्थात परमानंद ने अवतार धरा।

हम सिर्फ गाते है

हम सिर्फ पुकारते है

"नंद घर आनंद भयो"

कभी सोचा है - यह सिर्फ गुनगुनाते है तो अपने तन, मन और धन में कुछ तरंग जागते है। यह तरंग जो अनुभूति कराता है वह कबतक? जबतक हम ....

प्रयत्न करलो।

पर

हम यह अनुभूति हम क्यूँ खो देते है?

अवश्य सोचो।

"Vibrant Pushti"

श्री निकुंज नायक

श्री वैष्णव नायक

श्री पुष्टि नायक

श्री वल्लभ नायक

श्री प्रीत नायक

श्री राधा कृष्ण श्यामा श्याम की

श्री कृष्ण चतुर्थप्रिया कमलजा सपत्नी की

श्री गोपि गोवर्धन श्री स्वामिनी अष्टसखा की

"Vibrant Pushti"

पुष्टि में रहना जीवन कृतार्थ है

पुष्टि में जीना जन्म अजन्मा है

पुष्टि में खोना व्रज रज में भटकना है

पुष्टि में डूबना यमुना, प्रकृति, धरती रस पीना है

पुष्टि में संगना अष्टसखा से खेलना है

पुष्टि में जुड़ना षोडस ग्रंथ से संवरना है

पुष्टि में सेवना अष्ठ शमा मनोरथ धरना है

पुष्टि में भटकना गिरिराजजी परिक्रममा दंडवतना है

पुष्टि में बसना चौरासी बैठकजी स्पर्शना है

पुष्टि में खेलना वल्लभ कुल जगाना है

पुष्टि में रमना वैष्णव वैष्णव लूटाना है

"Vibrant Pushti"
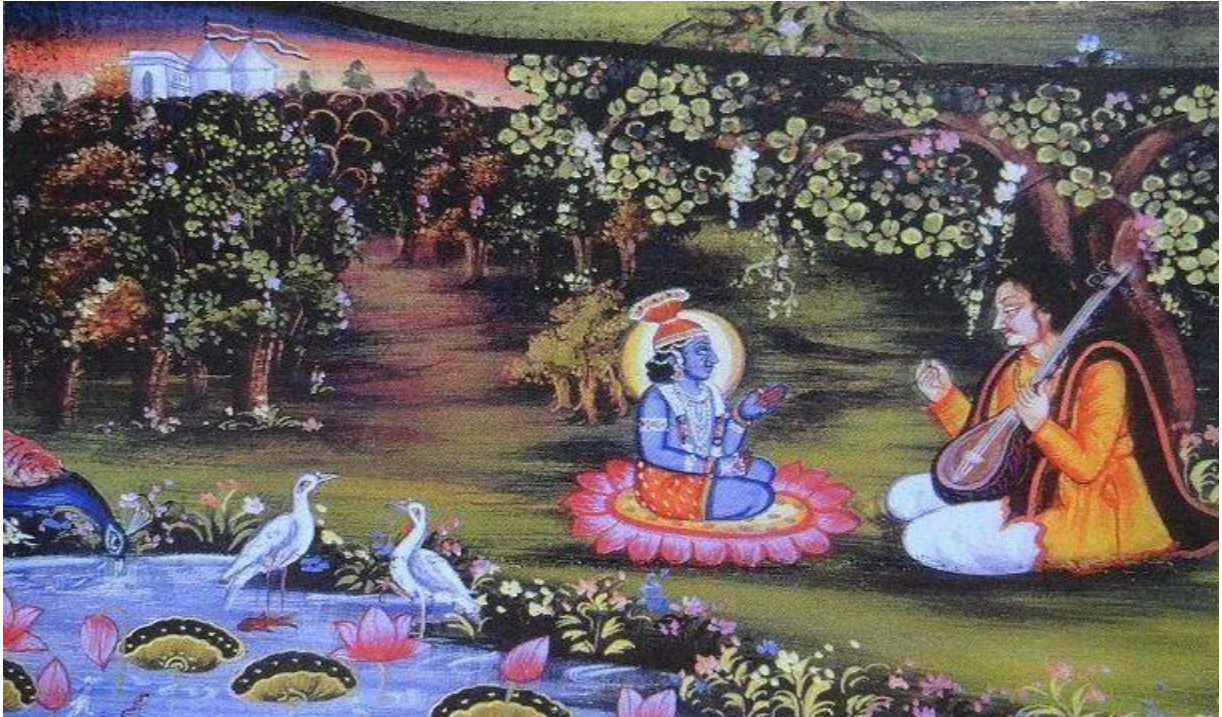
श्री गोवर्धन की पिछवाई सजाऊँ

हरियाली वनस्पतियाँ से निकुंज रचाऊँ

मयूर पोपट मेना को गुनगुनाऊँ

गौ गौपालों के संग गोरस उछलाऊ

श्री श्री नाथजी से लीला कराऊँ

अष्टसखा से ताल बँधाऊ

झुलन झूले होले होले प्रियतम

"Vibrant Pushti"

एक व्यक्ति श्री वल्लभाचार्यजी के जो भी सत्संग व्रज में होता था तो वह अचूक उनके सत संग स्पर्श और पुष्टि स्वर स्पर्श के लिए पहुँचता ही था और खुद को और खुद के कुटुंब को पुष्टि धन बटोरता था। श्री वल्लभाचार्यजी यह आत्मीय से वाकिफ़ थे, और सदा उन पर पुष्टि कृपा रखते थे।

धीरे धीरे यह गंठन एक दूसरे को इतने निकट ले आया कि श्री वल्लभाचार्यजी सदा उनकी प्रतीक्षा करने लगे और वह व्यक्ति श्री वल्लभाचार्यजी को खुद के अंतरंग में बसाने लगा।

ऐसे कहीं समय बितने लगा....... और दोनों निकट से अति निकट आ गये। पूरे व्रज में यह बात ऐसी फैल गयी कि श्री वल्लभाचार्यजी अपने सत्संग में एक व्यक्ति से इतने प्रभावित हो जाते है कि वह अपने आपको भी भूल जाते है अर्थात पूरे वह व्यक्ति में खो जाते है।

चारों ओर यह बात ऐसी फैल गयी और सब सोचने लगे कि श्री वल्लभाचार्यजी के निकट तो केवल अष्टसखा ही और श्री दामोदरदास हरसानीजी ही है तो इतने निकट ऐसा व्यक्ति कौन? सब अचंबित रह गये और सब सत्संगी भक्तों ने फैसला लिया कि आज सत्संग में प्रथम हम पूछेंगे - यह कैसी निकटता और यह कौन है?

सर्वे सत्संगी भक्तों श्री वल्लभाचार्यजी को मिलने आये, श्री वल्लभाचार्यजी उन सर्वे का मुखडा देख कर समझ गए और मुस्कुराने लगे और सोचने भी लगे।

श्री वल्लभाचार्यजी मुस्कुराए उनके सर्वे का मुखडा देख कर की ये सब कितने संसारी है, लौकिक है, मंद समझ के है।

सोचने लगे इसीलिए की मेरा इतना शुद्ध वचन, सत्संग और पुष्टि स्पर्श उन्हें कोई असर नही करता है तो क्या मेरा यही सामर्थ्य है कि मैं ऐसे जीवों का परिवर्तन नही कर पाता हूँ।

"Vibrant Pushti"

नयनों ने देखा सुंदिर श्याम

श्री प्रभु को प्रातः जगायी के

अधरों ने गाया जय श्री कृष्ण

श्री प्रभु को मंगला मांगल्य के

हस्तों ने स्पर्शाया श्री श्रीनाथजी

श्री प्रभु को श्रृंगार सजाय के

तन मन ने कृतकृताया श्री गिरिराजजी

श्री प्रभु को गौचारण कराय के

आत्म ने बसाया श्रीगोवर्धननाथजी

श्री प्रभु को राजभोग धराय के

रोम रोम ने पुरुषार्थाया श्री वल्लभाचार्यजी

श्री प्रभु को उत्थापन तिलक सोहाय के

स्मरण स्मरण ने बंधाया श्री ब्रह्मसंबंध

श्री प्रभु से पुष्टि भोग धराय के

प्रीत प्रीत की लीला रचाई श्री स्वामिनीजी

श्री प्रभु से संध्या आरती ओवराईजी

विरह विरह की रीत जताई श्री प्रियतमजी

श्री प्रभु ने शयन मिलन की तीव्रता मिटायीजी

ऐसा है अष्ठ सेवा आयाम श्री पुष्टि दंडवत प्रणामजी

"Vibrant Pushti"

" जय जय श्री मानसी पुष्टि "

मेरे श्री वल्लभ

मेरी श्री यमुना

मेरे श्री गिरिराज

मेरी श्री स्वामिनीजी

मेरे श्री श्रीनाथजी

मेरे श्री परम वैष्णव

"Vibrant Pushti"
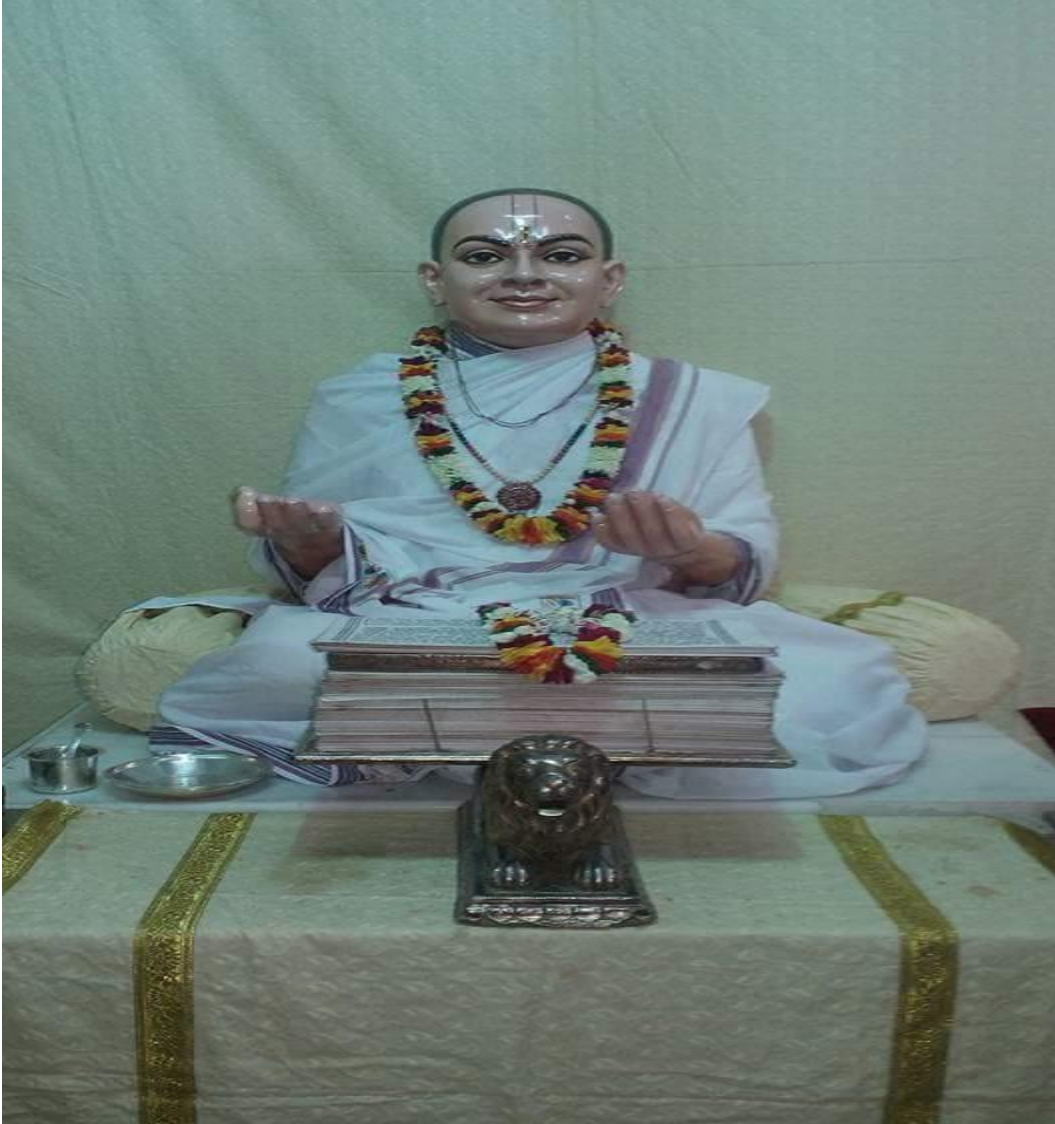
अधरं मधुरं वदनं मधुरं

नयनं मधुरं हसितं मधुरम ।

श्री कृष्ण अधरं।

श्री कृष्ण मधुरं।

श्री कृष्ण वदनं।

श्री कृष्ण मधुरं।

श्री कृष्ण नयनं।

श्री कृष्ण मधुरं।

श्री कृष्ण हसितं।

श्री कृष्ण मधुरम।

हृदयं मधुरं गमनं मधुरं

श्री राधा हृदयं।

श्री राधा मधुरं।

श्री राधा गमनं।

श्री राधा मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

वचनं मधुरं चरितं मधुरं

वसनं मधुरं वलितं मधुरम

श्री नाथ वचनं।

श्री नाथ मधुरं।

श्री नाथ चरितं।

श्री नाथ मधुरं।

श्री नाथ वसनं।

श्री नाथ मधुरं।

श्री नाथ वलितं।

श्री नाथ मधुरम।

चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं

श्री सखी चलितं।

श्री सखी मधुरं।

श्री सखी भ्रमितं।

श्री सखी मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुर पादौ मधुरौ।

श्री गिरिराज वेणु

श्री गिरिराज र्मधुरो।

श्री गिरिराज रेणु।

श्री गिरिराज र्मधुर:।

श्री गिरिराज पाणि।

श्री गिरिराज र्मधुर:।

श्री गिरिराज पादौ।

श्री गिरिराज मधुरौ।

नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं

श्री सखा नृत्यं।

श्री सखा मधुरं।

श्री सखा सख्यं।

श्री सखा मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

गीतं मधुरं पीतं मधुरं

भक्तं मधुरं सृप्तं मधुरम

श्री गोपि गीतं।

श्री गोपि मधुरं।

श्री गोपि पीतं।

श्री गोपि मधुरं।

श्री गोपि भक्तं।

श्री गोपि मधुरं।

श्री गोपि सृप्तं।

श्री गोपि मधुरम।

रुपं मधुरं तिलकं मधुरं

श्री यशोदा रुपं।

श्री यशोदा मधुरं।

श्री यशोदा तिलकं।

श्री यशोदा मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

करणं मधुरं तरणं मधुरं

हरणं मधुरं रमणं मधुरम।

श्री वल्लभ करणं।

श्री वल्लभ मधुरं।

श्री वल्लभ तरणं।

श्री वल्लभ मधुरं।

श्री वल्लभ हरणं।

श्री वल्लभ मधुरं।

श्री वल्लभ रमणं।

श्री वल्लभ मधुरम।

वमितं मधुरं शमितं मधुरं

श्री नंद वमितं।

श्री नंद मधुरं।

श्री नंद शमितं।

श्री नंद मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा

यमुना मधुरा वीचिर्मधुरा।

श्री यमुना गुञ्जा।

श्री यमुना मधुरा।

श्री यमुना माला।

श्री यमुना मधुरा।

श्री यमुना यमुना।

श्री यमुना मधुरा।

श्री यमुना वीचि।

श्री यमुना र्मधुरा।

सलिलं मधुरं कमलं मधुरं

श्री व्रज सलिलं।

श्री व्रज मधुरं।

श्री व्रज कमलं।

श्री व्रज मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

गोपि मधुरा लीला मधुरा

युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम

श्री गोवर्धन गोपि।

श्री गोवर्धन मधुरा।

श्री गोवर्धन लीला।

श्री गोवर्धन मधुरा।

श्री गोवर्धन युक्तं।

श्री गोवर्धन मधुरं।

श्री गोवर्धन भुक्तं।

श्री गोवर्धन मधुरम।

इष्टम मधुरं शिष्टम मधुरं

श्री अष्टसखा इष्टम।

श्री अष्टसखा मधुरं।

श्री अष्टसखा शिष्टम।

श्री अष्टसखा मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

गोपा मधुरा गावो मधुरा

यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा

श्री पुष्टि गोपा।

श्री पुष्टि मधुरा।

श्री पुष्टि गावो।

श्री पुष्टि मधुरा।

श्री पुष्टि यष्टि।

श्री पुष्टि र्मधुरा।

श्री पुष्टि सृष्टि।

श्री पुष्टि र्मधुरा।

दलितं मधुरं फलितं मधुरं

श्री सेवा दलितं।

श्री सेवा मधुरं।

श्री सेवा फलितं।

श्री सेवा मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

दृष्टिम मधुरं कृतिं मधुरं

प्रीति मधुरं रासं मधुरं

श्री ब्रहमसंबंध दृष्टि।

श्री अष्टाक्षर मंत्र मधुरं

श्री षोडसग्रंथ कृतिं।

श्री रीति मधुरं।

श्री आत्मनम प्रीति।

श्री एकात्मन मधुरं।

श्री परमं रासं।

श्री अशं मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

मन मधुरं तन मधुरं

जन्म मधुरं जीवन मधुरं

श्री व्रजरज मन।

श्री गौचारण मधुरं।

श्री श्याम तन।

श्री श्यामा मधुरं।

श्री भक्त जन्म।

श्री समर्पण मधुरं।

श्री पुष्टि सिद्धांत जीवन।

श्री दामोदर मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरंचित मधुराष्टकं स्माप्तम।

"Vibrant Pushti"
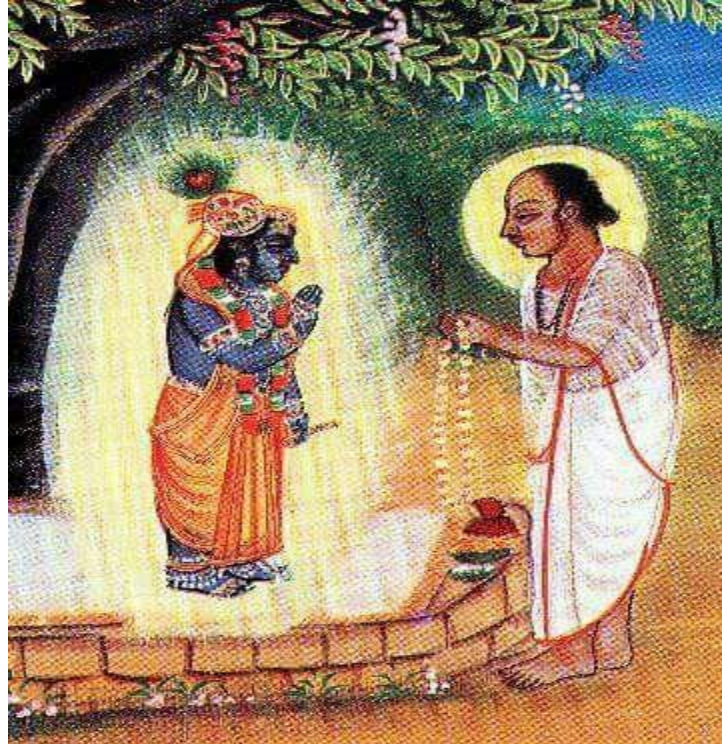
थकु मैं ऐसे विचारों से

जो मेरा संसार असार करे

हारु मैं ऐसी वृत्ति से

जो मेरा मन विचलित करे

डरु मैं ऐसे कुकर्म से

जो मेरा अंग अधर्म आचरे

याचूँ मैं ऐसी तृष्णा से

जो मेरा आंतर दीप बुझाये

भागु मैं ऐसी घृणा से

जो मेरा सामर्थ्य हारता जाये

छुपु मैं ऐसे वचन से

जो मेरा अस्तित्व मिटाता जाये

पूछूं मैं ऐसे कथन से

जो मेरा ज्ञान मूर्खता जाये

निभाऊं मैं ऐसे रंज से

जो मेरा संबंध अहवेलता जाये

संस्कृतु मैं ऐसी अविद्या से

जो मेरी शिक्षा भ्रष्टति जाये

विचरु मैं ऐसे कुसंस्कार से

जो मेरा जन्म मरता जाये

अर्चनु मैं ऐसे स्वार्थ से

जो मेरा धन बिखरता जाये

रहूँ मैं ऐसी अशुद्धि से

जो मेरी प्रीत दुष्टति जाये

भजु मैं ऐसे संदेह से

जो मेरा प्रभु रुठता जाये

नहीं नहीं! हे प्रभु प्रियतम!

न मुझसे कुछ ऐसा होना

जो मैं तेरा अंश न रहूँ।

"Vibrant Pushti"

"कृष्ण" क्या क्या है?

हमारे परम प्रिय श्री आचार्यजी हममें श्री कृष्ण का निरूपण कैसे करते है?

हम जो भी मनुष्य है, हममें विशुद्धता, पवित्रता, विश्वसनीयता, योग्यता, अखंडता, स्थिरता और आनंदमयता का उत्स जो करें और धरे वही हमारे परम प्रिय गुरु है, हमारे परम प्रिय आचार्य है।

संप्रदाय कोई भी हो पर जो हममें अपनी

अनन्ता एव कृष्णस्य लीला नामप्रवर्तिका:।

पुरुषो ध्यानमत्रोतक्तमं सिद्धि: शरणसंस्मृति:।

भक्तोध्दवार प्रयत्नात्मा जगत्कर्ता जगन्मय:।

भक्तिप्रवर्तकस्त्राता व्यासचिन्ताविनाशक:।

अन्तरात्मा ध्यानगम्यो भक्तिरत्नप्रदायक:।

भक्तकार्यकनिरतो द्रौण्यस्त्रविनिवारक:।

भक्तसम्यप्रणेता च भक्त वाक्परिपालक:।

ब्रह्मण्यदेवो धर्मात्मा भक्तानां च परीक्षक:।

उत्तराप्राणदाता च ब्रह्मास्त्रविनिवारक:।

ओहह मेरे श्रेष्ठतम श्री प्रभु!

ओहह मेरे परम श्रेष्ठ श्री आचार्य!

आपने हमें क्या क्या रहस्य कह दिये, सार्थक किया, सिद्ध किये, प्रमाणित किये।

आपको हमारा कोटि कोटि वंदन!🙇

आपको हमारा साष्टांग दंडवत प्रणाम!🙇

कितनी सहजता और सरलता से हममें श्री कृष्ण को उत्स किया और निरुपण किया।

अदभुत!

"Vibrant Pushti"

जो भूमि हमारी है

जो भूमि हमारी साँस से गति करती है

जो भूमि में हमारी प्रीत है

जो भूमि में हमारा पुष्टि जीवन है

"Vibrant Pushti"

मानव

मानुस

मनुष्य

क्या है ये?

मन + आव = मानव

मन + आउस = मानुस

मन + उष्य = मनुष्य

मन सर्वे में है

अब

आव = जिसके पास मन आये

जिसके पास से मन जाये

जिसजे साथ मन जाये

जिसके साथ से मन जाये

जिसके आंतर मन गति करे

जिसके अंदर मन मनचले

यह है मानव

आउस = जो मन को उत्स करे

जो मन का उदभव करे

जो मन को चल अचल करे

जो मन को चंचल करे

जो मन को उजागर करे

जो मन को जागृत करे

यह है मानुस

उष्य = मन का उष हो

मन का धारण हो

मन का धर्म हो

मन का प्रकटना हो

मन का शिक्षण हो

मन का सकर्म हो

मन का संचलन हो

मन का संतुलन हो

यह है मनुष्य

अभी समझले हम कौन है और कैसे है?

"Vibrant Pushti"
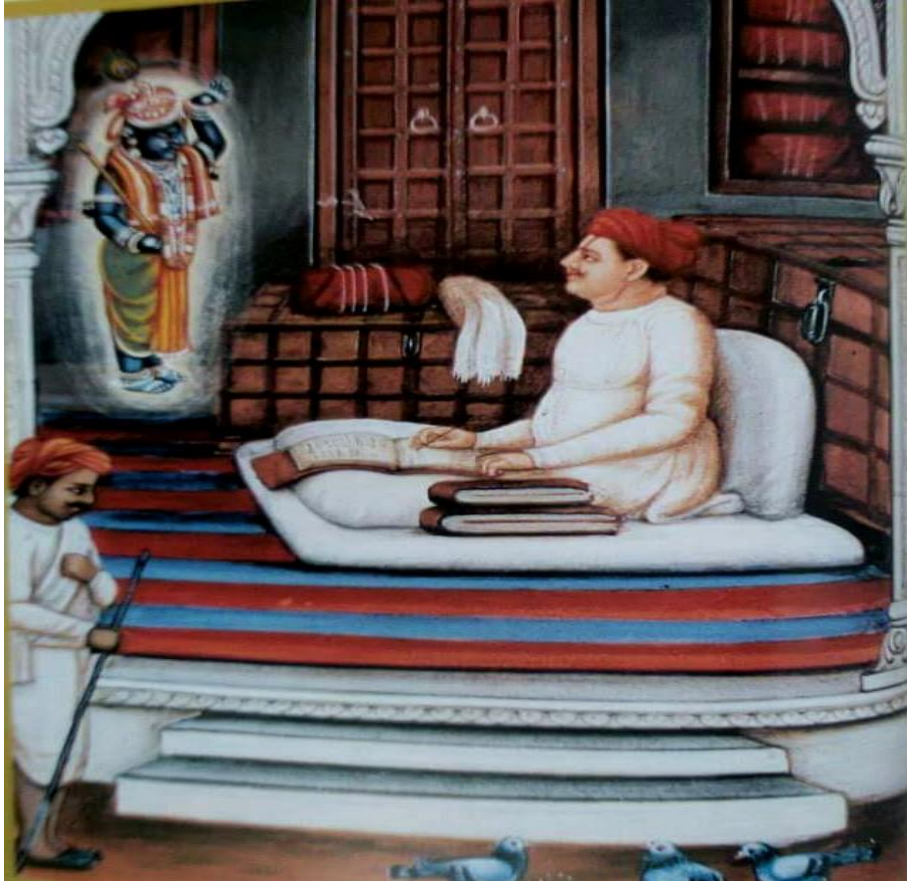
कभी रुकता हूँ

कभी टटोलता हूँ

कभी जागता हूँ

कभी सोता हूँ

कभी ठहरता हूँ

कभी दौड़ता हूँ

कभी संभलता हूँ

कभी टकराता हूँ

कभी जलता हूँ

कभी तडपता हूँ

कभी भूलता हूँ

कभी छोड़ता हूँ

कभी तोड़ता हूँ

कभी झूमता हूँ

कभी रोता हूँ

कभी सहमता हूँ

कभी विरहता हूँ

कभी गुमसुमता हूँ

कभी अपनाता हूँ

कभी नाचता हूँ

कभी गाता हूँ

कभी भटकता हूँ

कभी भागता हूँ

कभी रमता हूँ

कभी भोगता हूँ

कभी सोचता हूँ

कभी उठता हूँ

कभी पुकारता हूँ

कभी तरसता हूँ

कभी स्पर्शता हूँ

कभी ठुकराता हूँ

कभी जीता हूँ

कभी मरता हूँ

हे मेरी प्रीत! तेरे लिए मैं क्या क्या हूँ?

कभी राधा! कभी यमुना!

कभी कृष्ण! कभी श्याम!

कभी सीते! कभी गोपि!

कभी राम! कभी गोपाल!

क्या क्या करता हूँ!

ऐसे ऐसे ही तुझसे जुड़ता हूँ अकेला अकेला

हे मेरी पुष्टि!

"पुष्टि पुष्टि" अर्थात

जो पाया पुष्टि स्पर्श

वो स्पर्श से मेरी सारी सृष्टि को पुष्टि कर दिया

जो सारी सृष्टि से मेरे आंतर बाह्य तन मन धन आत्म को पुष्टि किया

मेरे तन मन धन आत्म से सारे जन्म जन्मांतर को पुष्टि किया

मेरे सारे जन्म जन्मांतर से हर वंश को पुष्टि किया

मेरे हर वंश से मेरे पूर्वजों को पुष्टि किया

मेरे पूर्वजों से मेरे कुल को पुष्टि किया

मेरे कुल से मेरे ब्रह्मसंबंध को पुष्टि किया

मेरे ब्रह्मसंबंध से मेरे परम प्रिये को पुष्टि किया

मेरे परम प्रिये से मेरी परम प्रीत पुष्टि किया

जो सदा मेरे आंतर निकट है

"Vibrant Pushti"

तुझे चाहा

तुझे पूंजा

तुझे कुरबाया मैंने

बस यही खता है मेरी

और खता क्या है?

मुझे मेरा प्यार मिला

हर एक बूंद से मुझे

पुष्टि पुष्टि शीतलता पायी

"Vibrant Pushti"

"ॐ नमः भगवते वासुदेवाय"

"ॐ " क्या है?

"नमः" क्या है?

"भगवते" क्या है?

"वासुदेवाय" क्या है?

ॐ यह एक निराकार नाद है

यह नाद को हम अपनी आंतरिक जागरुकता से उन्हें हम ब्रह्म में रूपांतर करते है, जो हमारे आत्मा से प्रकट हो कर परमात्मा से एकात्म करने का प्रथम स्वर है - नाद है - हमारा गुणधर्म है।

ॐ हमारी ऊर्जा है जो हमारी आंतरिक शुद्धि को सिद्ध करती है। जो हमारे पंच महाभूत तत्त्वों को योग्य करके हमारे तन, मन और आत्म में वहन करके सर्वे मूलभूत तत्त्वों को समांतर करके साक्षर और पवित्र करती है।

"नमः" नमन करता हूँ। नमः को योग्यता से समझना अति आवश्यक है। "नमः" जब भी उच्चारते है - हमारा मस्तिष्क में जो शिखा धरी है, वह सतेज हो कर हमें ज्ञानामृत की धारा से जोड़ देता है। जो हमारे ज्ञान में वृद्धि करके हमें सदा निरहंकारी करती है। जो सदा वनस्पति की तरह स्थिर और झुकने को विस्मृत करती है, प्रणाम करती है, वंदन करती है, नमन करती है। 🌷🙇🌷

"भगवते" भगवते - भग + वते = भगवते।

भग अर्थात छः सिद्धि जो धारण करें हुए,

भग अर्थात छः सिद्धि जो पाये हुए,

भग अर्थात छः सिद्धि से सृष्टि, प्रकृति और धामों को संचालित करता परम तत्व।

"वासुदेवाय" वासुदेवाय - वासु अर्थात जिसने वसुंधरा को अपना बनाया है,

वासु अर्थात जिसने सृष्टि, प्रकृति का हर अहंकार खुद में बसाया है,

वासु अर्थात जो ब्रह्मांड के हर कण कण, रज रज, जर्रा जर्रा में बसे परंब्रह्म तत्व।

जो सर्वज्ञ देते है वह दैवत्व,

जो सर्वत्र लूटाते है वह दैवत्व,

जो कृतज्ञ स्पर्शाते है वह दैवत्व,

जो आनंद प्रकाटते है वह दैवत्व,

जो संरक्षण करते है वह दैवत्व,

जो सेवक प्रीत आचरते है वह दैवत्व।

"Vibrant Pushti"

"दिक्षु"

गोपिगीत का अलौकिक शब्द है।

गोपिगीत के रच हिता ने गोपि की दृष्टि कितनी अनोखी है, कितनी विशुद्ध है, कितनी सरल है, कितनी प्रीतमयी है, यह समझाया है।

दिक्षु अर्थात ऐसे चर्म चक्षु जो केवल और केवल अपने प्रियतम को ही निहालती रहती है, ढूंढती रहती है, खोजती रहती है, फरकती रहती है, मचलती रहती है, पसरती रहती है, तड़पती रहती है, बरसती रहती है।

यह कक्षा कितनी असाधारण है, जो श्रेष्ठता से ऐसे जीव तत्व में खिलती है जो जीव तत्व को न डर है जगत का, न फिक्र है संसार की, न संकोच है अपने जीवन का, है तो केवल और केवल अपने प्रियतम - कृष्ण! यही तो गोपिगीत की प्राथमिकता है।

यही प्रथम शिक्षा है - पुष्टि सेवा की।

"Vibrant Pushti"

निकुंज में पधारे

श्री नाथ प्यारे प्यारे

श्री नाथ प्यारे प्यारे

श्री वल्लभ के दुलारे

निकुंज में पधारे

श्री नाथ प्यारे प्यारे

गोवर्धन पर्वत पधारे

गौ गोपि से गौचारण करे

नटखट नटखट लीला रचाये

गिरिराज प्यारे प्यारे

गिरिराज प्यारे प्यारे

गौपालों के रखवाले

निकुंज में पधारे

श्री नाथ प्यारे प्यारे

श्री यमुनाजी तट बिराजे

बंसीवट पर चिर चुराये

गोप गोपि संग रास रचाये

श्याम प्यारे प्यारे

श्यामा के प्यारे प्यारे

प्रियतम हो हमारे

निकुंज में पधारे

श्री नाथ प्यारे प्यारे

श्री नाथ प्यारे प्यारे

पंकज के पुष्टि प्रिये

निकुंज में पधारे

श्री नाथ प्यारे प्यारे

"Vibrant Pushti"

जगाया कृष्ण का ज्ञान मेरे मन मंदिर में

उदभाया कृष्ण का भाव मेरे अंग अंग में

पधराया कृष्ण का पार्दुभाव मेरे चित्त में

बसाया कृष्ण का प्रेम मेरे आत्म में

रंगाया कृष्ण का रंग मेरे तरंग में

स्पर्शाया कृष्ण का चरित्र मेरे जीवन में

सजाया कृष्ण का शृंगार मेरे आँचल में

हे वल्लभ! आपने

हे यमुना! आपने

हे गोवर्धन! आपने

हे राधा! आपने

हे गोपि! आपने

हे अष्टसखा! आपने

हे वैष्णव! आपने

"Vibrant Pushti"

मेरा शरण है वल्लभाचार्य

मेरी सृष्टि है यमुनाराणी

सरपे पुष्टि संस्कृति

दिल है अष्टसखा रुहानी

निकल पडे है जय श्री कृष्ण कहके

पुष्टि पंथ समझने

श्री श्री नाथजी को मिलने

गोवर्धन परिक्रमा करने

ठहरना गोविंद धून पुकारनी

चलना गौचारण जगानी

सरपे पुष्टि संस्कृति

दिल है अष्टसखा रुहानी

ब्रह्मसंबंध तुलसी माला धर

वैष्णव तन मन जगाने

रोम रोम श्री कृष्ण प्रकटाने

नित्य सत्य रमत खेलने

पलटना संसार वृत्ति छोडके

छूटना अहंकार अंग जलाके

सरपे पुष्टि संस्कृति

दिल है अष्टसखा रुहानी

पलक उघडते ही स्मरण मेरे श्री नाथजी के

नैन खुलते ही दर्शन मेरे श्री नाथजी के

होठ फडफडते ही पुकार मेरे श्री नाथजी के

हस्त उठते ही वंदन मेरे श्री नाथजी के

पैर चलते ही दंडवत मेरे श्री नाथजी के

मेरे श्री नाथजी के मेरे श्री नाथजी के

मेरे श्री नाथजी के मेरे श्री नाथजी के

मन जागते ही तडपे मेरे श्री नाथजी

तन उठते ही नाचे मेरे श्री नाथजी

धन खिलते ही बरसे मेरे श्री नाथजी

आत्म तेजते ही प्रकटे मेरे श्री नाथजी

आत्म परमात्मा मिलते ही एक मेरे श्री नाथजी

मेरे श्री नाथजी मेरे श्री नाथजी

मेरे श्री नाथजी मेरे श्री नाथजी

"Vibrant Pushti"

वार्ता कर दिया चरित्र को

इतिहास कर दिया एक सत्य को

भूतकाल कर दिया वर्तमान को

सुख कर दिया सच्चिदानंद को

दु:ख कर दिया एक विशुद्ध दर्द को

देव कर दिया परमेश्वर को

साधन कर दिया साक्षात को

नेह कर दिया परमप्रीत को

यंत्र कर दिया प्राकृतिक को

विष कर दिया विश्वास को

कैसे है हम!

जो पूर्ण पुरुषोत्तम रुप से प्रकट भये

श्री कृष्ण कन्हैया को आकार कर दिया

कुछ करें ऐसा जो आकार को साकार कर दे

कुछ जगायें ऐसा जो निराकार को साकार कर दे

ओहहहह! श्री वल्लभ!

"Vibrant Pushti"

"श्री कृष्ण शरणं मम:" धून गाये

"जय श्री कृष्ण" मंत्र आंतर मुख से जागे

आज श्री वल्लभ पधारे मेरे द्वार

मैं नीत नीत नाचुं आज

ढोल मंजीरा बाजे

उडे लाल गुलाल

प्रीत बंधन की माला सिद्ध करी

ब्रह्म संबंध की आण गंठन करी

पुष्टि रीत कीर्तन से उर्जा जगायी

मधुरम गीत से गूँज उठाई

आये मेरे वल्लभ प्यारे मेरे वल्लभ

पधारे मेरे वल्लभ स्पर्शे मेरे वल्लभ

नजर में वल्लभ नजारों में वल्लभ

नैनों में वल्लभ दर्शन में वल्लभ

होठों पर वल्लभ कर्णों पर वल्लभ

अंग अंग में वल्लभ संग संग में वल्लभ

रोम रोम में वल्लभ रज रज में वल्लभ

साँस साँस में वल्लभ दास दास में वल्लभ

रुप रुप में वल्लभ रुह रुह में वल्लभ

ब्रह्म में वल्लभ ब्रह्मांड में वल्लभ

सृष्टि में वल्लभ युक्ति में वल्लभ

जगत में वल्लभ भक्त में वल्लभ

संसार में वल्लभ सार सार में वल्लभ

आकाश में वल्लभ प्रकाश में वल्लभ

साकार में वल्लभ आकार में वल्लभ

धरती पर वल्लभ हस्ती पर वल्लभ

वल्लभ वल्लभ वल्लभ वल्लभ

"Vibrant Pushti"

"वल्लभ"

ब्रह्मांड का आनंद है

प्रकृति की वसंत है

सृष्टि की मधुरता है

जगत की सुबह है

संसार की खुशी है

"वल्लभ" कोई शब्द नहीं है, नाम नहीं है।

"वल्लभ" कोई मंत्र नहीं है, कोई जप नहीं है।

"वल्लभ" कोई व्यक्ति नहीं है, कोई संस्कृति नहीं है।

"वल्लभ" कोई साधन नहीं है, कोई संबंध नहीं है।

"वल्लभ" तो उर्जा है, स्पर्श है।

"वल्लभ" तो अनुभूति है, अनुमति है।

"वल्लभ" तो साक्षात है, सर्वज्ञ है।

"वल्लभ" तो विशुद्ध है, विश्वास है।

"वल्लभ" तो सत्य है, सर्जन है।

"वल्लभ" तो सेवा है, प्रीत है।

"वल्लभ" का ह्रदयस्थ और आत्मसात अर्थ है - आनंद।

जीवन के हर प्रकार का आनंद में वल्लभ समाये हुए है।

वल्लभ है - आनंद है।

जीव है तो वल्लभ है - वल्लभ है तो आनंद है

जीव तत्व के हर तत्व में आनंद है

यही ही पुष्टि सेवा प्रीत रीत है।

प्रकट भये श्री वल्लभ

पधारे हमारे द्वार द्वार

हर तन मन धन आत्म

व्रज रज बने, यमुना बने

हर रोम रोम साँस साँस

गोवर्धन बने, अष्टसखा बने

कण कण पुष्टि धाम

हर निकुंज हर यमुना घाट

श्री वल्लभ बसे घट घट

यही है पुष्टि वैष्णव लीला

ऐसे ही बसे "श्री नाथजी नाथ"

"Vibrant Pushti"

हे यमुना!   हे यमुना!

मेरी मैया पुष्टि नैया

हमरी धात्री रहें

हे यमुना!   हे यमुना

तेरे स्मरण से

तनुनवत्व मिले

तेरे दर्शन से

पुष्टि किरण मिले

तेरे शरण से

व्रज रज मिले

तेरे पान से

कान्हा प्रीत मिले

मैया! हे यमुना मैया

यमुना! हे यमुना

तेरे निकुंज से पुष्टि रीत जागी

तेरे किनारे से वल्लभ सेवा प्रकटी

तेरे ओवारें से ब्रह्मसंबंध सांधी

तेरे तट से पुष्टि प्रीत लीला रंगी

हे मेरे जीवन की श्यामा

हे मेरे रोम रोम की प्रिया

तु ही मेरी हर जन्म संगिनी

तु ही मेरी प्रिय प्रियतम धरणी

तेरे सहारे मेरी गोवर्धन परिक्रमा चले

तेरे आधारे मेरी पुष्टि निधि बसे

हे यमुना! हे यमुना!

मेरी मैया! पुष्टि नैया

"Vibrant Pushti"

पुष्टि प्रीत सेवा की महक से महका दिया दिल

पुष्टि प्रीत सेवा के फूलों से सजा दिया मन

हर प्रीत चरण पर रहूँ

यही तो है पंकज का खिलना

निकट निकट की है पुष्टि पहचान

"Vibrant Pushti"

हे यमुना! मेरी प्रिया!

साथ हूँ तेरा पास हूँ तेरी अंदर हूँ तेरे

चाहे कितने भी अशुद्ध करदे तेरा आँचल

चाहे कितनी भी बेरंग करदे तेरे सिंचन

मेरी महकती हर साँस तुझमें बसी है

मेरे तन का हर रंग तेरे रोम रोम में मिला है

न डरना कभी यह स्वार्थ भरे मानवों से

न गभराना कभी यह निर्लज दानवों से

हर द्रष्टि से तेरी रक्षा करता हूँ

हर प्रकृति से तुझे संवारता हूँ

कितने भी असभ्य मन से ऊजाडे

कितने भी असंगत दोष से बरबादे

मेरी मधुर सी तान सदा सुनाऊंगा

मेरे सौंदर्य की हर अदा सजाऊंगा

नर पिशाच को नष्ट करुँगा

नर निशाचर को कष्ट दूँगा

कैसे है यह असंस्कृत जाती

कैसे है यह अभद्र निवासी

जो माता हर तरह से ख्याल धरें

जो माता हर तरह से सलामत रखें

अभी भी जाग जाओ

हे मानव! हे दानव!

शुद्ध करो, संस्कृत करो

बूँद बूँद से पवित्र करदो

लहर लहर से सुंदर करदो

धार धार से अमृत करदो

प्रीत प्रीत से विशिष्ट विशुद्ध करदो

यही है हमारा जन्म

यही है हमारा जीवन

यही है हमारा धर्म

यही है हमारा कर्म

यही है हमारा पुष्टि पान

यही है हमारा वैष्णव ज्ञान

"Vibrant Pushti"

जागु और जगाऊ हर पल हर घडी

त्यागु और तरासु हर नित हर रीत

संवरु और संवारु हर कृत हर वृत्त

ध्याऊ और ध्यायाऊ हर ज्ञान हर गान

चाहु और चहाऊ हर हाव हर भाव

बसु और बसाऊ हर रस हर रास

पाऊ और पाआऊ हर प्रीत हर जीत

ऐसी है भक्ति

ऐसी है संस्कृति

ऐसी है प्रकृति

ऐसी है प्रवृत्ति

ऐसी है पुष्टि सेवा निधि

"Vibrant Pushti"

राधा का प्रेम हो

कृष्ण का कर्म हो

यमुना का धर्म हो

गिरिराज का तप हो

वल्लभ का पुष्टि ज्ञान हो

श्री नाथजी का भक्त वत्सल हो

गोपि का समर्पण हो

गोप का गौचारण हो

अष्टसखा का भाव हो

वैष्णव का दासत्व हो

यही मुझे पहचानना है

यही मुझे खुद में जगाना है

यही मुझे स्पर्श पाना है

यही मुझ में बसाना है

इनमें मुझे लूट जाना है

इनमें मुझे खो जाना है

इनमें मुझे डूब जाना है

इनमें मुझे न्योछावर होना है

इनमें मुझे पुष्ट होना है

इन्हें मुझे दंडवत करना है

इन्हें मुझे समर्पण करना है

इसलिए तो मेरा जन्म है

इसलिए तो मेरा जीवन है

इसलिए तो मेरा धर्म है

इसलिए तो मेरा कर्म है

"Vibrant Pushti"

" हे श्री वल्लभ ! तुने जताई जो रीत वो ही है मेरी प्रीत "

हे यमुना!

कलियुग के कलंक से तु काली

काले मन के काल जन से तु काली

काल के काले करतूतों से काली

कटु वचन कटु स्वर कटु रीत से काली

काली काली हे काली कैसी मतवालों से काली

क्या करें पंकज खिलके हर बूँद से तु काली

यही है कलियुग की कहानी

"Vibrant Pushti"

कहीं दूर से

कहीं रीत से

कहीं ख्याल से

पर

केवल प्रीत से

निकट होना है

निकट रहना है

निकट पाना है

यही तो जन्म है

यही तो पुष्टि है

यही तो जीवन है

यही तो प्रीत है।

हे मेरे श्री वल्लभ!

तेरी रीत और लीला न्यारी है!

"Vibrant Pushti"

श्री नाथजी श्री नाथजी

हे श्री नाथजी!

हे श्री नाथजी!

पधारे मेरे निकुंज श्री नाथजी

भक्त वत्सल है मेरे श्री नाथजी

गौचारण की लीला रच कर

गोवर्धन से प्रकटे श्री नाथजी

पुष्टि वैष्णव कर के मुझे

मुखारविंद स्पर्श कराये श्री नाथजी

उनका मैं हुआ ऐसे संसार में

न मेरे थे पर मेरा हाथ थामा श्री नाथजी

ओहहह! मन पुकारने लगा

ओहहह! तन नाचने लगा

मेरे श्री नाथजी!

मेरे श्री नाथजी!

श्री वल्लभ से आत्मब्रह्म जोडा

श्री यमुना से पुष्टि प्रीत जोडी

श्री गिरिराज से सेवा जोडी

श्री अष्टसखा से भक्ति जोडी

ओहहह! कितने कृपा वर्धक है श्री नाथजी

ओहहह! कितने प्रीत सर्जक है श्री नाथजी

दंडवत मेरे!

समर्पण मेरे!

प्रियतम मेरे!

"Vibrant Pushti"

पुष्टि मार्ग की अलौकिकता अनुभव करने कहीं रीत और प्रणाली हमें समझनी और अपनानी अति आवश्यक है।

जो कहीं व्यकतित्वों में आज भी नादानीयत से यही रीत और प्रणाली बिना पहचान करते रहते है और रूढिचुस्तता पैदा करते करते कहींओ को अवहेलना करते हुए अनुभव करते रहते है और कभी तो मजाक में परिवर्तन कर देते है।

मुझे माफ करना अगर मैं कहीं भी और कोई भी प्रकार की पुष्टि प्रीत रीत की अहवेलना करने की कोशिश करता हूँ तो या किसी भी व्यक्ति को ठेस पहुंचाता हूँ तो।

मेरा उद्देश्य केवल योग्यता प्रस्थापित करनी ही है।

जिज्ञासा है -

1. अपरस का सिद्धांत क्या है?

2. आज के समय में "गुरु आज्ञा" का अर्थ क्या है?

"Vibrant Pushti"
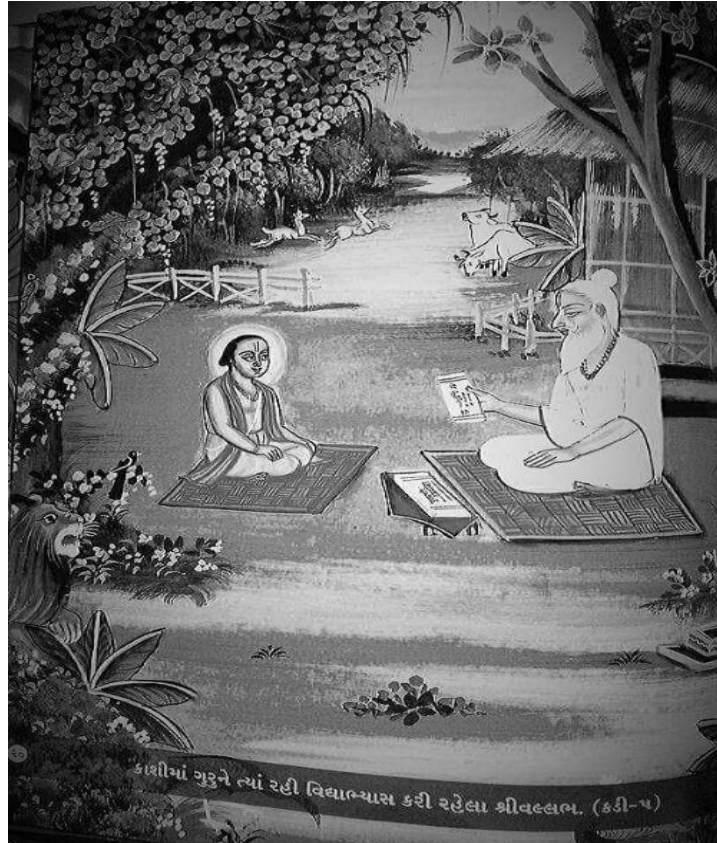
अपरस के अधिकारी कौन?

सच! यह इतनी सुंदर और अलौकिक रीति पर हम चिंतन और मनन करते है, जिससे आंतरिक आनंद का प्राकट्य सारे तन मन और प्राकृतिक को रोमांचित और पुलकित कर रहे है।

क्यूँकि

परम निकट से परम स्पर्श पाकर परम आत्म मिलन होता है।

अपरस के अधिकारी या साथी यही तत्व पाते है जो तत्व है

जो तत्व परम समर्पित और परम भक्त और परम शरणागत हो।

जो तत्व सदा मन और तन से श्री प्रभु स्मरण का गूँजन करता हो।

जो तत्व सदा सेवा स्पर्श से जुडा हो - सेवा के हर प्रकार में सेवक तत्पर्य हो।

जो तत्व स्व विचार, स्व क्रिया, स्व ध्याय, स्व आस्था, स्व विश्वास, स्व स्वास्थ्य से सरल, निर्मल, शुद्ध, पवित्र, और सत्य प्रिय हो।

जो तत्व अपने जीवन के संसर्गित तत्वों को समांतर समझता हो।

जो तत्व की द्रष्टि, सृष्टि और वृष्टि में वात्सल्य, निष्कपट, निर्दोष, निर्मोही और निरंकारी हो।

जो तत्व सदा विवेक प्रिय, विवेक धैर्य, व्यवहार विशुद्धिय, स्वकिय आंतर संयमी, परम धर्मिय, परम प्रमेय साध्य हो।

जो तत्व सदा प्रसन्न, उत्सव प्रिय, स्व शिक्षिय, आनंद उत्सर्जित हो।

यह तत्व अपरस के अधिकारी है।

जिसमें न जन्म, जाति, कुल और वंश परंपरागत रीति - निधि नहीं है।

सत्य से स्पर्शीत श्री वल्लभाचार्यजी की प्राथमिक पुष्टि सेवा निधि और उनसे हृदय स्पर्शे हुए प्रारंभिक वल्लभ अनुरागी वैष्णवों का चारित्र्य ही हमें यह प्रमाणित और योग्यता स्पर्श करवाते ही है।

श्री दामोदरदास हरसानीजी

श्री कुंभनदासजी

श्री कृष्णदास मेघनजी

श्री हरिरायजी

श्री रामदास मुख्याजी

और कहीं सेवक....... जो हमारे लिए सदा उत्कृष्ट है।

"Vibrant Pushti"

" श्रीनाथजी बावा की जय "

अपरस

अपरस - जो स्पर्श नहीं

हम अपरस का उल्लंघन करते रहते है

आँखों से

मुह से

कानों से

हाथों से

तन से

मन से

धन से

विचार से

क्रिया से

व्यवहार से

व्यवस्था से

अहंकार से

अंधविश्वास से

अर्धसत्य से

असमंजस से

अर्धज्ञान से

अज्ञानता से

परिस्थिति से

अनियमन से

आवेग से

दुर्बलता से

संजोग से

असहिष्णुता से

राग से

रोग से

मान्यता से

सामाजिक बंधन से

संवेदना से

डर से

रुढिचुस्तता से

वासना से

आंतरिक और बाह्य समय से

और

हमारे अंदर झरते आंतरिक रस से - जो तत्वों से हमारी रचना हुई है वह तत्वों सदा प्रकृति से संयोजित होते रहते है।

यही सर्वेक्षण से हमें सदा जागृत रह कर मन धन तन और संस्कार घडते घडते जीवन सुयोग्य करना है, सुयोग्यता से ही हम पुष्टि तत्व का स्पर्श पायेंगे, यही अपरस का माहात्म्य है, संवर्धन है, सार्थकता है।

"Vibrant Pushti"
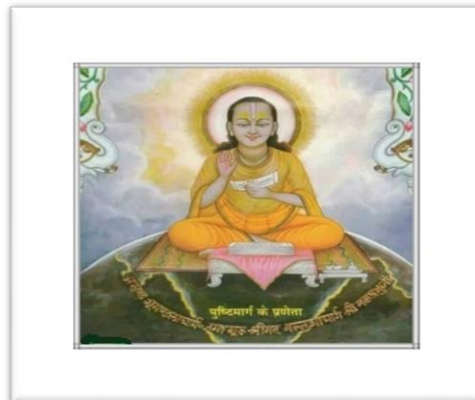
अपरस

अपरस की रीत में एकाग्रता और स्थिरता मुख्य है। पुष्टि मार्ग के अनोखे सिद्धांत की अलौकिक निधि है, अदभुत स्पर्श है, सर्वोच्च आनंद प्रकट करने का माधुर्य स्पंदन है।

अपरस में छूट जाता है संसार

अपरस में तुट जाता है जगत बंधन

अपरस में लूट जाता है आंतरिक तन मन

अपरस में जुट जाता है जन्म जीवन

अपरस में फूट जाता है नसीब तरंग

अपरस में मिट जाता है मैं और तुम

श्री वल्लभाचार्यजी ने अपने माधुर्य अनुभूति की पुष्टि प्रीत रीत में हमें अपरस एक एसा सिद्धांत प्रदान किया है जो हम बार बार श्री प्रभु के निकट पहुँचे।

सोचो! जबसे श्री वल्लभ ने अपनी शास्त्र शिक्षा इतनी छोटी उम्र में पाली और समझली उसी क्षण से उन्होंने अपरस सिद्धांतवली रचायी और अपनायी।

हम तो कितने भाग्यशाली है कि हमें तो जन्म से पुष्टि प्रीत रीत मिली!

तो हम अपरस की सर्व श्रेष्ठ सिद्धांतवली को अपना कर आज के संसार की, आज के अशिक्षित धर्म संस्थापको की मान्यता को तिलांजलि दे कर खुद को जागृत करके श्रीवल्लभाचार्यजी की योग्य अपरस सिद्धांतवली ही क्यूँ न अपनाये जिससे खुद का जीवन पुष्टि मय हो जाय।

"Vibrant Pushti"

अपरस

हम गृह सेवा करते है, हम हवेली पहूँचते है। हम कहीं प्रकार की प्रणाली में बैठ जाते है, और जो प्रणाली हम करते रहते है या अपनाया होता है उसकी चर्चा, उसकी उच्चता, उसका स्पर्श और उसकी योग्यता को दोहराते रहते है।

अपरस कोई माप तोल, उच निच, योग्य अयोग्य, ऐसा वैसा, एक दूजे का प्रमाणित करना और ना समझ होने पर "आज्ञा" कहके अपने आपको संतुष्टि और संकुचित करना नहीं है।

अपरस तो एक अनोखा और अलौकिक पुष्टि प्रीत सेवा का सिद्धांत है जिसमें श्री प्रभु का स्पर्श कैसे पाना, श्री प्रभु का योग्य सेवक कैसे होना वह जताता है, वह श्री प्रभु में सायुज्य भाव प्राकट्य की सर्वोच्चता है।

यह कोई छूत अछूत का खेल नहीं है।

यह कोई उच निच का भेद नहीं है।

यह कोई सामर्थ्य का विवरण नहीं है।

यह कोई तन मन की तुलना नहीं है।

यह तो समर्पण की प्रक्रिया है।

यह तो शरणागत की पहल है।

"श्री वल्लभाचार्यजी" शत् शत् दंडवत!

"Vibrant Pushti"

अपरस

अपरस में हूँ

अपरस में रहना है

यह अपरस है

अपरस में ही यह होता है

अपरस के कहीं प्रकार है

हर प्रकार का माहात्म्य है

हर प्रकार की शुद्धता और पवित्रता की जवाबदारी और जिम्मेदारी है।उनमें हर रीति की जवाबदारी और जिम्मेदारी पवित्रता से निभानी होती है।

जहाँ जहाँ सेवा और पुष्टि सेवा है वहां वहां अपरस है।

अपरस के मुख्य दो प्रकार है

1. खासा 2. सेवकी

खासा अपरस केवल और केवल श्री प्रभु की सेवा निधि है। यह अपरस में जो सेवक मुख्य सेवा निधि के योग्य, चुस्तता और अखंडता से संपूर्ण शुद्ध और पवित्र से पुष्टि प्रीत सिद्धांत सेवा अपनाये हुए व्यक्तित्व - मुख्याजी, प्रधान संरक्षक, गोस्वामी बालकों और उनके परिचारगी होते है।

सेवकी अपरस में केवल और केवल श्री प्रभु की सेवा निधि के जो मुख्याजी, प्रधान संरक्षक, गोस्वामी बालकों और उनके परिचारगी की सेवा में जो सेवकी करें जो साथ कर्मनिधि करें वह सेवक एवं व्यक्तित्व।

"Vibrant Pushti"

"अपरस"

सच कहे तो ऐसा कोई शब्द नहीं है यह शब्द कोष में पर हम जो हमारी मान्यता में जी रहे है इसलिए इन्हें अपनाना होता है।

अगर यह शब्द हमनें अपनाया ही है तो यह शब्द की पुष्टि व्याख्या या अर्थ अलौकिक है सर्वोच्च है।

पुष्टि मार्ग में यह शब्द एक सिद्धांत है और इनकी सार्थकता अति विशेष है।

अस्पर्श का सूरभ्रम और स्वरभ्रम हो गया अपरस।

श्री वल्लभाचार्यजी ने यह सिद्धांत को पवित्र से समर्पण से और शरणागत से अपनाया है।

यह अपरस का सिद्धांत क्षण क्षण से लेकर युग युगांतर के लिए है, जो कभी मिट नहीं सकता, छूट नहीं सकता, त्याग नहीं कर सकते।

आज अपरस सिध्दांत का इतनी निम्नता से त्याग हो रहा है, छूट रहा है, मिटा रहे है। पर सत्य यही ही है कि वह मिट नहीं सकता, छूट नहीं सकता, त्याग नहीं कर सकते।

"Vibrant Pushti"

हे मेरा प्यार!

हे उल्फत! तुझे थामा है

यही मेरा धर्म है

यही मेरा कर्म है

यही मेरा समर्पण है

यही मेरा एकात्म है

यही मेरा ब्रह्म संबंध है

" Vibrant Pushti "

न परवाह है संसार के झंझालो की

न परवाह है देश की राज रमत की

न परवाह है ना समझ कोई कुल की

न परवाह है कुछ असमंजस रीति की

परवाह है सिर्फ पुष्टि प्रीत सेवा की

परवाह है सिर्फ श्री वल्लभ सिद्धांत की

परवाह है सिर्फ शरणागत गिरिराज चरण की

परवाह है सिर्फ पुष्टि स्पर्शी वैष्णव जन की

यही दृष्टि, यही सृष्टि, यही तुष्टि, यही वृष्टि

जिससे हर क्षण हर तत्व में पुष्टि प्रकट भये।

"Vibrant Pushti"

नैनों से निरखते निरखते

पलकें झुक झुक कर दंडवत करे

अधरों से पुकारते पुकारते

दोनों होठों मचलते दंडवत करे

नासिका से साँस आते जाते

प्राण की गति रुकते दंडवत करे

धडकन से स्वर गूँजते गूँजते

दिल की प्रीत छूते छूते दंडवत करे

दर्शन करते करते

नैना अपलक हो गई

साँस भरते भरते

खुद दिल में प्रकट हो भई

द्वार से द्वार पर हर भक्त खडा

श्री कृष्ण शरणं स्मरण करते

जय श्री कृष्ण हर नजर निहारते

दौडे श्री नाथ के चरण द्वार

पाया तन मन धन शृंगार

धन्य धन्य हुआ आत्म छू कर मंगल दर्शन

दंडवत प्रणाम रज से सुहाया पुष्टि चरण

"Vibrant Pushti"

"गोवर्धन"

गौ संवर्धन

गौ संपालक

गौ संरक्षक

गौ संचारण

गौ संसेवक

गौ संस्पर्श

गौ संप्रीत

गौ सुसंस्कृत

गौ सुसंगठन

गौ सुसंगत

गौ सुसंस्कार

गौ सुसंयोजन

गौ सुरमण

गौ सुनित्य

गौ सुमित्र

गौ सुसज्जित

गौ सुसौंदय

गौ सुमाधुर्य

"Vibrant Pushti"

श्रीमद् वल्लभाचार्यजी कहते है

"सेवायां वा प्रीतियां वा, यस्यासक्तिर्द्रढा भवेत।

या यज्जीव तस्य नाशो न क्वापीति मर्तिमम्।।"

पुष्टि मार्ग में सेवा वा प्रीति में मनुष्य जीव और जीवन द्रढ आसक्त होता है, यही रीत से तन मन धन निर्मल, निर्दोष, निष्कलंक, निष्कंटक, निष्कपट, निर्लिप्त, निर्लेप, और दीनता में रहता है जिससे हर विचार, व्यवहार सरल और शुद्ध रहता है।

सेवा और प्रीति से मनुष्य कर्म सर्वोच्च होता है जिससे सांसारिक कृति और विकृति का नाश होता है, केवल सेवा और प्रीत का ही कर्म स्वीकार्य हो कर परम विशुद्ध आत्मा, तन, मन, धन का क्षण क्षण तनुनवत्व हो कर परम प्रिये श्री नाथजी में एकात्म होता है।

"Vibrant Pushti"

ऐसे निकट रहो सदा व्रजरज से

जितना श्री राधा कृष्ण रहते है

जितना वैष्णव यमुनाजी से रहते है

जितना पुष्टि प्रेमी श्री वल्लभ से रहते है

जितनी पुष्टि प्रीत सेवा से तन मन धन रहते है

"Vibrant Pushti"

बाहर तो कितने दीप जलाये है
जिससे सारा जगत है रोशन
दिल में प्रकट हुआ एक पुष्टि दीपक
जिससे सारा आत्म है सूरज
एक ही संकल्प
श्री वल्लभ पुष्टि किरण
मेरे मन को चुरा लिया
मेरे तन को भूला दिया
मेरे आत्म को पुष्ट किया
मैं यह प्रीत को दीपावली समझूं
मैं यह रीत को नूतन वर्ष अभिनंदन समझूं
जो हर पल आंतर यमुना जागे
जो हर पल आंतर गिरिराज जागे
जो हर पल आंतर व्रजरज जागे
जो हर पल आंतर पुष्टि प्रीत सेवा जागे
जो हर पल आंतर "मेरो तो आधार श्री वल्लभ के चरणांरविंद"
जो हर पल आंतर जागे "साँसों का साथ श्री अष्टसखा कीर्तन सूर"
जो हर पल आंतर जागे "श्यामा श्याम की प्रीत मधुर"
"शुभ दीपावली"
"शुभ पुष्टि किरण"
"शुभ वल्लभ रंग"
"शुभ वैष्णव संग"
"जय श्री कृष्ण"
"Vibrant Pushti"

ॐ नम: भगवते वासुदेवाय!

ॐ नम: भगवते वासुदेवाय!

ॐ नम: भगवते वासुदेवाय!

ॐ उं..........................!

उं..............................!

नम:............................!

नम:............................!

भगवते........................!

भगवते........................!

वासुदेव.......................!

वासुदेव.......................!

वासुदेवाय...................!

वासुदेवाय...................!

ॐ नम: भगवते वासुदेवाय!

ॐ नम: भगवते वासुदेवाय!

व्रज रज स्पर्शम्!

व्रज रज स्पर्शम्!

व्रज रज स्पर्शम्!

श्रीयमुना पानम्!

श्रीयमुना पानम्!

श्रीयमुना पानम्!

श्रीगिरिराज यात्रम्!

श्रीगिरिराज यात्रम्!

श्रीगिरिराज यात्रम्!

श्रीअष्टसखा कृतम्!

श्रीअष्टसखा कृतम्!

श्रीअष्टसखा कृतम्!

श्रीराधा प्रीत प्राप्यम्!

श्रीराधा प्रीत प्राप्यम्!

श्रीराधा प्रीत प्राप्यम्!

श्रीश्याम वेणुगीत कर्णम्!

श्रीश्याम वेणुगीत कर्णम्!

श्रीश्याम वेणुगीत कर्णम्!

श्रीगोवर्धन नाथ नाथम्!

श्रीगोवर्धन नाथ नाथम्!

श्रीगोवर्धन नाथ नाथम्!

श्रीवल्लभ पुष्ट शरणम्!

श्रीवल्लभ पुष्ट शरणम्!

श्रीवल्लभ पुष्ट शरणम्!

"Vibrant Pushti"
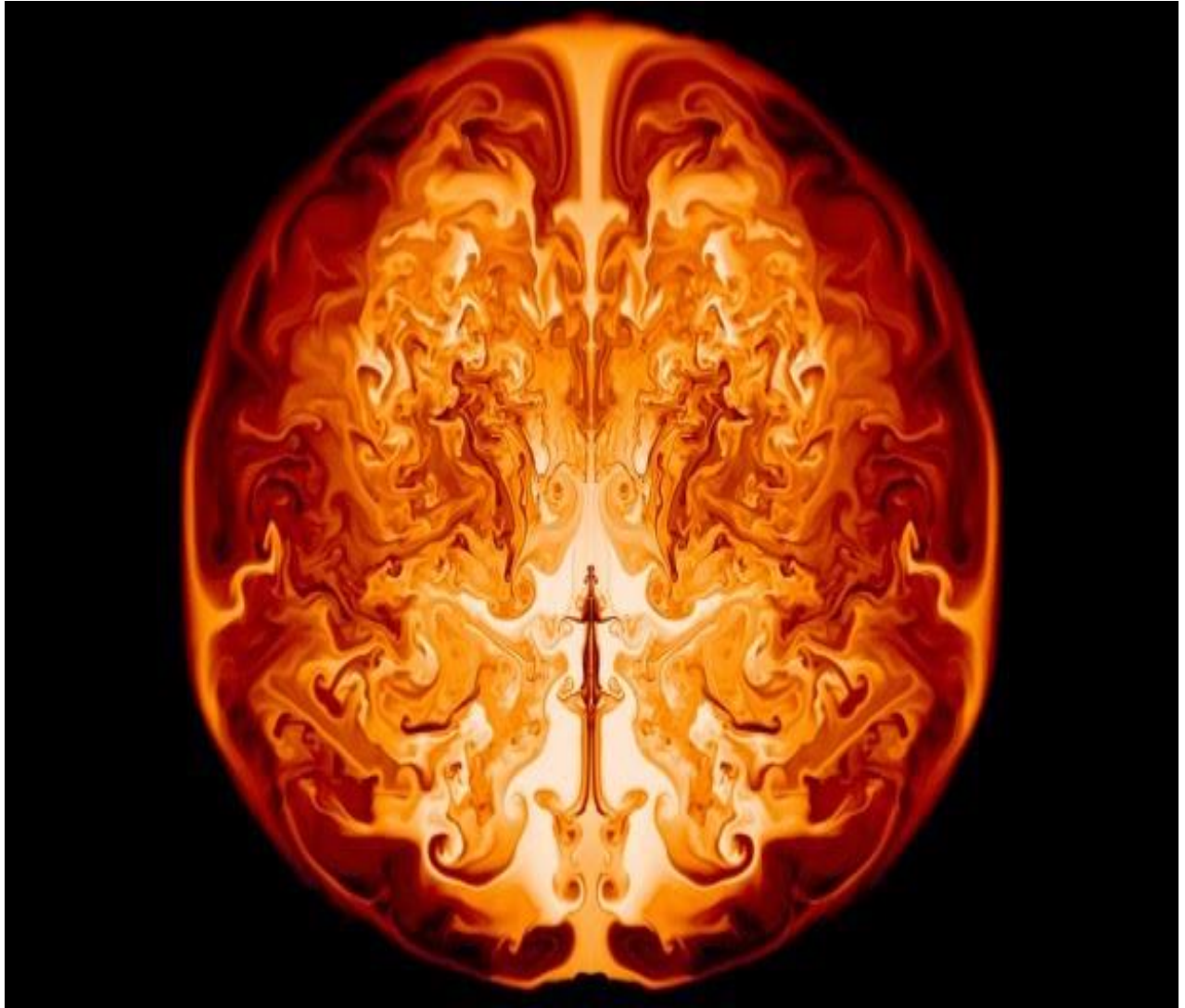
दूज से यमुना जुडे

जुडे भाई भगिनी प्रीत

पुष्टि मार्ग की अनोखी रीत

हर कोई न भूलें अपनी बहन

साथ साथ यमुना स्पर्श करें

तोडे भव भव के जन्म कष्ट

एक को ऊगारे खुद को संवारे

ऐसी है यम यमुना की रीत

जो जुडे हम सर्व के कृत

"Vibrant Pushti"

विचार - क्रिया - कार्य - कर्म - वृत्त - वृत्ति - वृत्र।

यह है जीवन।

हर एक कक्षा से जीवन का चारित्र्य घडता जाता है।

जो जो कक्षा से जीव छूटता जाता है ऐसी उनकी गति होती है।

यहाँ ही उनका धर्म - अर्थ - काम और मोक्ष रचाता जाता है।

यही से उनका जन्म - मृत्यु और ज्ञान-भक्ति जागती है।

यही से उनकी श्री प्रभु प्रीत प्रकट होती है।

यही से उनका श्री प्रभु एकात्मता उत्स होती है।

श्री वल्लभ! आपको दंडवत प्रणाम!

श्री वृत्र! आपको नत मस्तक वंदन!

सच में यह कितना अनोखा और सरल आत्मीय स्पर्श है श्री प्रभु और परम भक्त का।

यह समझना इतना आवश्यक है हर जीवन को।

अदभुत, अलौकिक, पवित्र, प्रीत सभर

वाह! मेरे श्री वल्लभ!

Vibrant Pushti"

"दास" पुष्टि मार्ग का यह एक अलौकिक लक्षण है।

"दास" जानना, समझना, अपनाना और पाना सर्वाधिक क्रिया और विचारकता है।

दास - दासत्व - दास्य - दासक्त ।

यही तो पुष्टि मार्ग की पराकाष्ठा है।

यही तो पुष्टि मार्ग की शरणागतता है।

यही तो पुष्टि मार्ग की दीनता है।

यही तो पुष्टि मार्ग की न्योछावरता है।

यही तो पुष्टि मार्ग की सर्वज्ञता है।

"Vibrant Pushti"

नाथद्वारा पहूँचते है

तो

"श्री नाथजी"

गिरिराज पहूँचते है

तो

"श्री गिरिराजजी"

अलौकिकता है इतनी की

हर दिन नाथद्वारा

हर रात गिरिराज

बस यही है हमारा जीवन भी

हम सूरज उगते ही "जय श्री कृष्ण"

हम चंद्र खिलते ही "श्री कृष्ण शरणं मम्:"

इसलिए तो

सूबह यमुना पान

रात गिरिराज ध्यान

करते रहते है हर रात दिन

पर

नहीं जीते है हर रात दिन

यही अंतर है पुष्टि वैष्णव

यही अंतर है जो खुद को समझे वैष्णव

श्री वल्लभ कहे

समझे

यमुनाष्टकम्

गिरिराजधार्यष्टकम्

पुष्टि प्रीत की निराली

जो छू ले वह व्रज दुलारी

"Vibrant Pushti"

"यमुना"

"यमुना मैया"

"यमुना महाराणी"

"यमुना चतुर्थ प्रिया"

"यमुना सूर्य सूता"

"यमुना यम भगिनी"

"यमुना वैष्णव धात्री"

"यमुना व्रज रज जननी"

"यमुना भक्ति वर्धिनी"

"यमुना पुष्टि संजीवनी"

"यमुना प्रीत विरहिणी"

"यमुना वल्लभ सूत्रता"

"यमुना योद्धा विश्रांति"

दंडवत प्रणाम श्री यमुना माताश्री

"Vibrant Pushti"
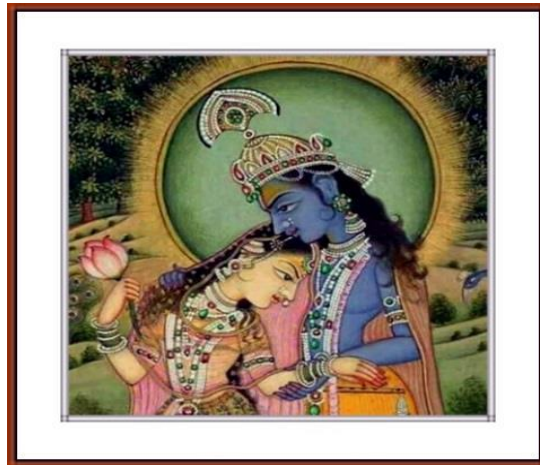
आत्मा क्या है?

आत्मा परमात्मा का अंश ही है

आत्मा से क्या क्या एकात्म होता है?

आत्मा से एकात्म होता है

हमारे पुत्र या पुत्री

हमारे पौत्र या पौत्री

वैसे ही

हमारे माता या दादी या नानी

हमारे पिता या दादा या नाना

हमारे पूर्वज

हमारी वंश वृद्धि प्रकृति

हमारी साँस

हमारी संस्कृति

हमारी सृष्टि

हमारे संस्कार

हमारी कर्म निधि

यह इतना गहरा और सर्वथा सत्य है

जिससे हमारा जीवन के घडतर में अमूल्य है

हमारी दिशा है

हमारी वृत्ति है

हमारी कृति है

हमारी अनुभूति है

हमारी सिद्धि है

हमारी गति है

हमारी प्रीत है

हमारा वात्सल्य है।

"Vibrant Pushti"
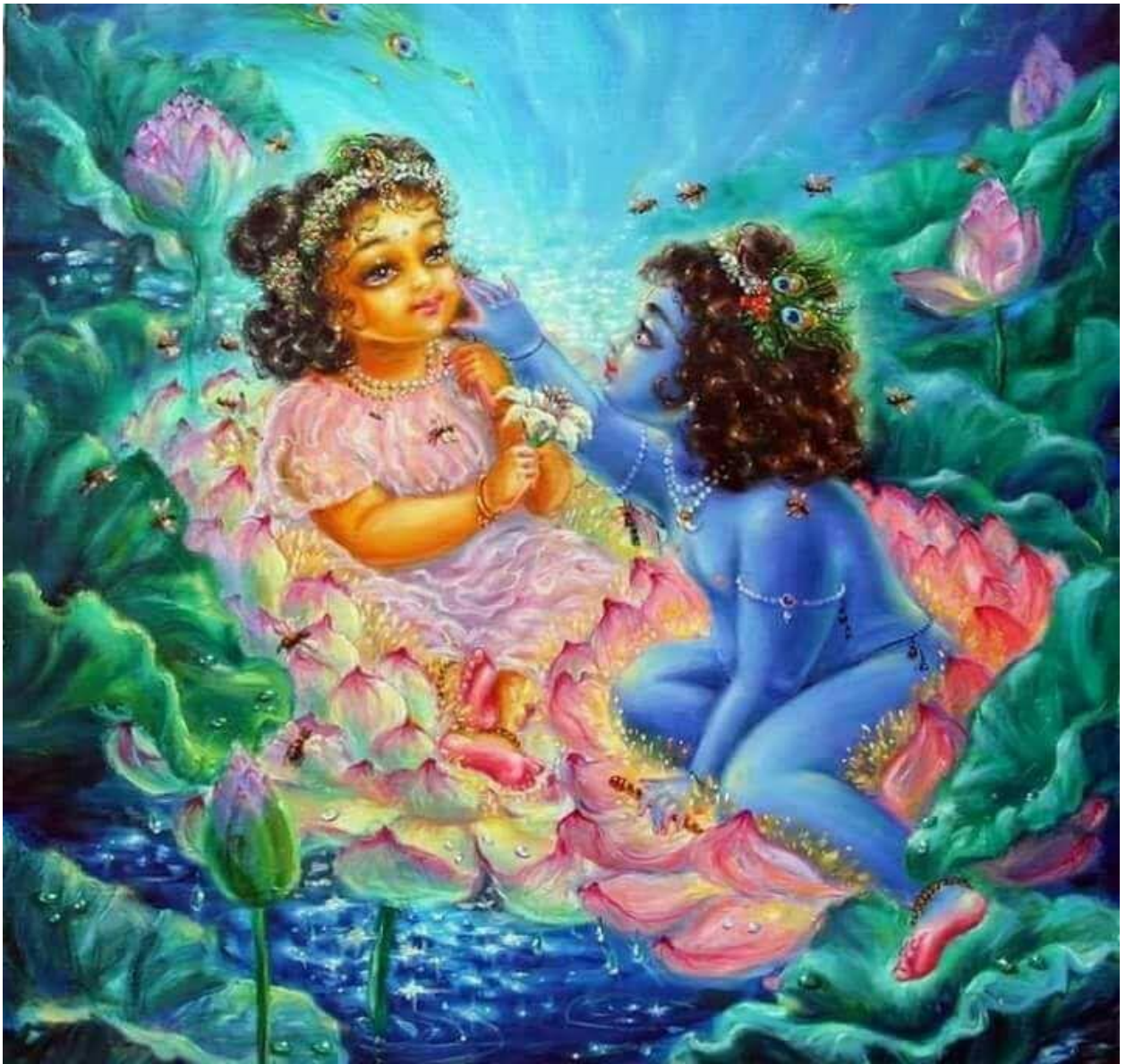
सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - पुष्टिमार्ग

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

"Vibrant Pushti"

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "